



Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ करवा चौथ व्रत कथा ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ करवा चौथ व्रत कथा ॥

प्राचीन समय में एक नगर में एक साहूकार रहता था। उसके सात पुत्र और एक पुत्री थी। पुत्री का नाम वीरावती था। वीरावती अपने भाइयों की बहुत लाड़ली थी। विवाह के बाद जब करवा चौथ का व्रत आया तो वह अपने मायके आई और अपनी भाभियों के साथ श्रद्धापूर्वक निर्जला व्रत रखा। वीरावती को व्रत के कारण बहुत कमजोरी महसूस होने लगी। उसे भूख और प्यास से अत्यधिक परेशानी होने लगी। उसके भाइयों से अपनी बहन की यह स्थिति देखी नहीं गई।

भाइयों ने अपनी बहन को व्रत खुलवाने के लिए एक उपाय सोचा। उन्होंने दूर एक पेड़ के पीछे दीपक जलाकर उसे छलनी की आड़ में इस प्रकार रखा कि वह चंद्रमा जैसा दिखाई देने लगा।

भाइयों ने वीरावती से कहा कि चंद्रमा निकल आया है, इसलिए वह चंद्र

देव के दर्शन करके अपना व्रत खोल ले।

वीरावती ने छलनी से उस प्रकाश को चंद्रमा समझकर दर्शन किए और व्रत खोलने की तैयारी करने लगी। जैसे ही उसने भोजन का पहला कौर ग्रहण किया, उसे अशुभ समाचार मिला कि उसके पति की तबीयत

अचानक बहुत खराब हो गई है।

वीरावती अत्यंत दुखी हुई और उसे अपनी भूल का पता चला। उसे समझ आया कि उसने वास्तविक चंद्रमा के दर्शन किए बिना ही व्रत खोल दिया था।

वीरावती अत्यंत दुखी हुई और उसे अपनी भूल का पता चला। उसे समझ आया कि उसने वास्तविक चंद्रमा के दर्शन किए बिना ही व्रत खोल दिया था।

वह अपने पति को लेकर बहुत चिंतित हुई और उसने पूरे श्रद्धा-भाव से माता पार्वती की आराधना की। उसने माता से अपनी भूल के लिए क्षमा माँगी और अपने पति के जीवन की रक्षा की प्रार्थना की।

वीरावती की सच्ची श्रद्धा और प्रार्थना से माता पार्वती प्रसन्न हुईं। उन्होंने वीरावती को आशीर्वाद दिया और कहा कि वह अगले करवा चौथ पर पूरे नियम और श्रद्धा के साथ व्रत करे तथा विधिपूर्वक चंद्रमा को अर्घ्य देकर व्रत का पारण करे।

वीरावती ने माता पार्वती के निर्देश के अनुसार अगले वर्ष करवा चौथ का व्रत पूरी श्रद्धा और विधि-विधान से रखा। रात्रि में वास्तविक चंद्रमा के दर्शन करके उन्हें अर्घ्य दिया और व्रत का पारण किया।

माता पार्वती की कृपा से उसके पति को पुनः स्वस्थ जीवन प्राप्त हुआ और उनके वैवाहिक जीवन में सुख-शांति लौट आई।

तब से करवा चौथ का व्रत पति की दीर्घायु, अच्छे स्वास्थ्य, सुखी दांपत्य जीवन और अखंड सौभाग्य की कामना से श्रद्धापूर्वक किए जाने की

परंपरा मानी जाती है। करवा चौथ व्रत कथा का संदेश

यह कथा श्रद्धा, संयम, विश्वास और व्रत के संकल्प की महत्ता बताती है। करवा चौथ केवल उपवास का पर्व नहीं, बल्कि पति-पत्नी के बीच प्रेम, विश्वास, समर्पण और मंगलकामना का प्रतीक भी माना जाता है।